



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

समान बाई की रचनाओं में भक्ति-भावना

सुहासिनी कविया

शोधार्थी

डॉ ललित कुमार श्रीमाली

शोध निर्देशक, हिंदी विभाग

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी) विश्वविद्यालय उदयपुर) राज.

Email- lalitshrimali2014@gmail.com, Mob - 9461594159

First draft received: 19.08.2026, Reviewed: 26.08.2026

Final proof received: 29.08.2026, Accepted: 29.09.2026

सारांश

राजस्थान की भक्ति परंपरा में स्त्रियों का योगदान अत्यंत समृद्ध और क्रांतिकारी रहा है। मध्यकाल में इन महिला संतों ने न केवल ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम (भक्ति) का प्रदर्शन किया, बल्कि तत्कालीन पुरुष-प्रधान रूढ़िवादी समाज और जाति-पाति के बंधनों को तोड़कर आध्यात्मिक व सामाजिक समानता की अलख जगाई। भक्तिमति समान बाई (1825-1885) राजस्थान के अलवर क्षेत्र में जन्मी एक महान कृष्णभक्त कवयित्री थीं, जिन्हें 'मत्स्य की मीरा' भी कहा जाता है। समान बाई के पदों में कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम, विरह, समर्पण और शरणागति की भावना प्रमुख है। उनके पदों में भक्त और भगवान के बीच प्रेमपूर्ण संबंध दिखाई देता है। वे सरल राजस्थानी भाषा में कृष्ण की भक्ति और उनके दर्शन की उत्कट इच्छा व्यक्त करती हैं। उनकी रचनाओं में भक्ति-भाव अत्यंत सरल, आत्मीय और लोकभाषा में व्यक्त हुआ है। साहित्य में उनका योगदान प्रेम, समर्पण, और दास्य भाव से परिपूर्ण है। उनके द्वारा रचित मंगलगीत (समान बाई के सोले) आज भी राजस्थान के चारण समाज में विवाह व मांगलिक अवसरों पर गाए जाते हैं। उनकी भक्ति में माधुर्य भाव (ईश्वर को प्रियतम मानना) और दास्य भाव (सेवक भाव) का अनुठा मिश्रण है। राजस्थानी साहित्य की भक्ति-परंपरा में अनेक महिला कवयित्रियों ने अपनी अनुभूतियों, आध्यात्मिक चेतना और आराध्य के प्रति समर्पण को लोकभाषा में अभिव्यक्त किया है। इस परंपरा में समान बाई का नाम विशेष महत्व रखता है। समान बाई की रचनाओं में कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम, विरह, दास्य-भाव, आत्मसमर्पण और ईश्वर-कृपा की आकांक्षा प्रमुख रूप से दिखाई देती है। उनकी भक्ति केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें व्यक्तिगत अनुभूति, प्रेम की तीव्रता और लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति का सुंदर समन्वय मिलता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में समान बाई की रचनाओं में व्यक्त भक्ति-भावना, विरह-वेदना, कृष्ण-प्रेम, शरणागति तथा लोकभाषा के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, उनकी काव्य-दृष्टि में नारी-मन की संवेदनशील अभिव्यक्ति को भी रेखांकित किया गया है।

मुख्य शब्द - समान बाई, राजस्थानी साहित्य, कृष्ण-भक्ति, विरह, माधुर्य भाव, दास्य भाव, शरणागति, लोकभाषा।

प्रस्तावना

भक्ति से आशय निष्काम भाव से युक्त भगवद् सेवा, प्रेम एवं शरणागति है। प्रागैतिहासिक काल में ही प्राकृतिक आपदाओं के नियंत्रक के रूप में किसी दिव्य शक्ति के प्रति पनपे भय एवं पूज्य भाव ने आदिम जातियों में भक्ति भाव को जन्म दिया। सिन्धु सभ्यता में मातृ शक्ति एवं शिव शक्ति को धूप, नैवेद्य का अर्पण तथा वहाँ देवदासियों, उपासिकाओं एवं नर्तकियों की मूर्तियाँ भक्ति की प्राचीनता को दर्शाती हैं। कालान्तर में भक्ति द्रविड सभ्यता के अन्तर्गत दक्षिण में प्रस्फुटित हो उत्तर भारत तक फैली और **भक्ति द्रविड उपजी** की कहावत प्रसिद्ध हो गयी। हमारे प्राचीन धार्मिक एवं दार्शनिक साहित्य में भक्ति तत्व के उल्लेख प्राप्त होते हैं। वेद उपनिषद्, महाकाव्य, गीता, जैन एवं बौद्ध साहित्य, पुराण एवं अन्य ग्रंथों में शरणागति, सेवा, प्रेम, भगवद् भजन आदि रूपों में भक्ति

की प्रधानता दृष्टिगत की जा सकती है। दक्षिण में पूर्व मध्य युग में नायनार एवं आलवार संतों ने भक्ति को जन आन्दोलन का रूप प्रदान कर दिया। इन संतों ने असंख्य भक्ति गीतों की रचना की और ईश्वर के प्रति प्रेम, शरणागति, सेवा के सिद्धान्त दिये द्रविड भक्त गीता और रामानुज के बीच की कड़ी थे। रामानुजाचार्य वे आचार्य थे जिन्होंने प्रपत्ति (शरणागति) को मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ उपादान घोषित किया और भक्ति के द्वार सभी के लिए खोल दिये। इनकी चौथी अथवा पाँचवी शिष्य परम्परा में स्वामी रामानन्द हुए जिनके साथ उत्तरी भारत में भक्ति का आन्दोलनकारी प्रवेश हुआ।

मध्यकाल में कट्टर इस्लाम प्रचारक हिन्दू धर्म, संस्कृति एवं साहित्य की धरोहरों को नष्ट कर रहे थे एवम् हिन्दू निम्न जातियाँ इस्लाम के बल एवं प्रलोभन की तरफ पलायन कर रही थी। यह स्थिति हिन्दू धर्म, संस्कृति एवं सामाजिक संगठन के लिए

चुनौतीपूर्ण थी। यह समय था जब इस्लाम को अवरुद्ध करना तथा विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संकुचित वृत्तियों का त्याग कर गृह कमजोरियों को समूल मिटा देने की आवश्यकता उत्पन्न हो गयी थी। इसी समय भारत में एक अभूतपूर्व आंदोलन हुआ जिसे भक्ति आंदोलन कहा गया। यह मध्यकालीन भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन है जिसके प्रवर्तक कई संत हुए। इस आंदोलन के जन्मदाता रामानुज माने जाते हैं। जिन्होंने विशिष्टाद्वैत के सिद्धांत की स्थापना कर जीवात्मा की अलग सत्ता का प्रतिपादन कर प्रपत्ति के सिद्धांत का प्रसार किया इसी प्रकार निम्बार्क ने कृष्ण की प्रेमपूर्ण भक्ति तथा माधवाचार्य ने निष्काम भाव से विष्णु भक्ति को मुक्ति हेतु आवश्यक निर्दिष्ट किया। भक्ति को जनधर्म बनाने का श्रेय रामानन्द को जाता है जिन्होंने भक्ति को दक्षिण से उत्तरी भारत में पुनर्जीवित कर लोकप्रिय बना दिया। इन्होंने राम और सीता की प्रेमाभक्ति पर बल दिया। संस्कृत के स्थान पर हिन्दी भाषा का प्रयोग किया, जाति वर्ग, लिंग विभेद से रहित समानता पर आधारित नई सामाजिक व्यवस्था का सूत्रपात किया इसी प्रकार अन्य संतों में बल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु नामदेव, रैदास, कबीर, गुरु नानक, सूर, तुलसी, ने भी भक्ति के सिद्धांतों का प्रसार किया तथा हिन्दू मुस्लिम धर्मों एवं संस्कृतियों के मध्य भ्रातृत्व भाव स्थापित किया। इन संतों का धर्म सरल और पवित्र था वे ऐकेश्वरवाद, निष्काम भावी भक्ति, गुरु की अनिवार्यता सत्संगति, हृदय की शुद्धता आदि में विश्वास करते थे तथा बहु देववाद, जात-पाँत, मूर्तिपूजा के विरुद्ध थे।

राजस्थान भी इस आंदोलन से अछूता नहीं रहा। इस समय संत पीपा, दादूदयाल, धन्ना, मीरा बाई, गवरी बाई, जाम्भोजी, लालदास जी, सुन्दर दास जी, रामचरण जी, दरियावजी, जसनाथ जी, राजू जी, माव जी इत्यादि लोक संतों ने राजस्थान के गाँवगाँव में धार्मिक-पुनर्जागरण एवं आदर्श लोक जीवन शैली की अलख जगाई। उन्होंने जन मानस के हृदय में ईश्वर में आस्था, सत्कार्यों की प्रवृत्ति, परोपकार एवं दया की भावना, प्रकृति तथा पर्यावरण प्रेम, मानव प्रेम, सहिष्णुता, मेलजोल एवं कर्मयोग की प्रवृत्ति को विकसित किया।

इसी क्रम में मत्स्य की मीरा के नाम से ख्याति प्राप्त समान बाई का नाम भी आता है, इन्होंने भक्ति को लोक जीवन से जोड़ा, राम और कृष्ण को लोक परंपराओं से जोड़कर अपने पदों में पिरोया। समाज में भक्ति से भरे राम एवं सीता विवाह के प्रसंगों की भावपूर्ण पदों में रचनाकर लोक रंगों को उजागर किया। जीवन सफलता में दृढ़ संकल्प के महत्व को मूर्त रूप देते हुए अपने आजीवन आंख पर पट्टी बांधे रखी। इन्होंने लिखा है कि जानकी नाथ सहाय करें उसको कौन बिगार करे नर तेरो यह सत्य है कि मानव रचना में परमात्मा की परम सत्ता के प्रति श्रद्धा विश्वास के भाव जन्मजात बीज रूप में है अतः मानव मन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाली भक्ति धारा ही है जिसके माध्यम से मनुष्य में मानवीय गुणों का विकास किया जा सकता है।

शोध उद्देश्य:- समान बाई की रचनाओं के आधार पर उनकी भक्ति भावना का मूल्यांकन।

भक्ति काव्य परंपरा:- मध्यकाल में कट्टर इस्लाम प्रचारक हिन्दू धर्म, संस्कृति एवं साहित्य की धरोहरों को नष्ट कर रहे थे एवम् हिन्दू निम्न जातियाँ इस्लाम के बल एवं प्रलोभन की तरफ पलायन कर रही थी। यह स्थिति हिन्दू धर्म, संस्कृति एवं सामाजिक संगठन के लिए चुनौतीपूर्ण थी। यह समय था जब इस्लाम को अवरुद्ध करना तथा विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक

संकुचित वृत्तियों का त्याग कर गृह कमजोरियों को समूल मिटा देने की आवश्यकता उत्पन्न हो गयी थी। इसी समय भारत में एक अभूतपूर्व आंदोलन हुआ जिसे भक्ति आंदोलन कहा गया। यह मध्यकालीन भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन है जिसके प्रवर्तक कई संत हुए। इस आंदोलन के जन्मदाता रामानुज माने जाते हैं। जिन्होंने विशिष्टाद्वैत के सिद्धांत की स्थापना कर जीवात्मा की अलग सत्ता का प्रतिपादन कर प्रपत्ति के सिद्धांत का प्रसार किया इसी प्रकार निम्बार्क ने कृष्ण की प्रेमपूर्ण भक्ति तथा माधवाचार्य ने निष्काम भाव से विष्णु भक्ति को मुक्ति हेतु आवश्यक निर्दिष्ट किया। भक्ति को जनधर्म बनाने का श्रेय रामानन्द को जाता है जिन्होंने भक्ति को दक्षिण से उत्तरी भारत में पुनर्जीवित कर लोकप्रिय बना दिया। इन्होंने राम और सीता की प्रेमाभक्ति पर बल दिया। संस्कृत के स्थान पर हिन्दी भाषा का प्रयोग किया, जाति वर्ग, लिंग विभेद से रहित समानता पर आधारित नई सामाजिक व्यवस्था का सूत्रपात किया इसी प्रकार अन्य संतों में बल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु नामदेव, रैदास, कबीर, गुरु नानक, सूर, तुलसी, ने भी भक्ति के सिद्धांतों का प्रसार किया तथा हिन्दू मुस्लिम धर्मों एवं संस्कृतियों के मध्य भ्रातृत्व भाव स्थापित किया। इन संतों का धर्म सरल और पवित्र था वे ऐकेश्वरवाद, निष्काम भावी भक्ति, गुरु की अनिवार्यता सत्संगति, हृदय की शुद्धता आदि में विश्वास करते थे तथा बहु देववाद, जात-पाँत, मूर्तिपूजा के विरुद्ध थे।

राजस्थान में भक्ति काव्य परंपरा :- राजस्थान भी इस आंदोलन से अछूता नहीं रहा। इस समय संत पीपा, दादूदयाल, धन्ना, मीरा बाई, गवरी बाई, जाम्भोजी, लालदास जी, सुन्दर दास जी, रामचरण जी, दरियावजी, जसनाथ जी, राजू जी, माव जी इत्यादि लोक संतों ने राजस्थान के गाँव-गाँव में धार्मिक पुनर्जागरण एवं आदर्श लोक जीवन शैली की अलख जगाई। उन्होंने जन मानस के हृदय में ईश्वर में आस्था, सत्कार्यों की प्रवृत्ति, परोपकार एवं दया की भावना, प्रकृति तथा पर्यावरण प्रेम, मानव प्रेम, सहिष्णुता, मेलजोल एवं कर्मयोग की प्रवृत्ति को विकसित किया।

राजस्थान की भक्ति परंपरा में महिलाएँ:- राजस्थान की भक्ति परंपरा में कई महिला संत अग्रणी और महत्वपूर्ण हैं:-
मीराबाई राजस्थान की सबसे प्रख्यात और विश्व-स्तरीय कृष्ण भक्त संता। इनका जन्म मेड़ता के कुड़की गाँव में हुआ था। मेवाड़ के राजघराने की वधू होने के बावजूद, उन्होंने सांसारिक मोह-माया त्याग कर कृष्ण को अपना पति मान लिया। उनके द्वारा रचित पद और मीरा के भजन आज भी संपूर्ण भारत में अत्यंत श्रद्धा से गाए जाते हैं। **रानाबाई** इन्हें "राजस्थान की दूसरी मीरा" भी कहा जाता है। नागौर जिले के हरनावा गाँव में जन्मी रानाबाई ने संत चतुरदास जी से दीक्षा ली थी। वे आजीवन कृष्ण भक्ति में लीन रहीं और अंततः जीवित समाधि ले ली। **करमेती बाई**: खंडेला) सीकर (की निवासी करमेती बाई विवाह से पूर्व ही कृष्ण भक्ति में इतनी लीन हो गईं कि अपना घर-परिवार छोड़कर वृंदावन चली गईं। उनकी स्मृति में खंडेला में ठाकुर बिहारी मंदिर का निर्माण भी करवाया गया। **समान बाई** अलवर निवासी समान बाई को भी "मत्स्य की मीरा" कहा जाता है। आजीवन अपनी आँखों पर पट्टी बाँधकर रखी और राधा-कृष्ण से जुड़े कई सुंदर मुक्तक पदों) भजनों (की रचना की। **फूली बाई** जोधपुर क्षेत्र की यह संत आजीवन अविवाहित रहीं और उन्होंने समाज में स्त्री शिक्षा व उदारता के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। **रानी रूपा देवी** बाड़मेर के मल्लीनाथ जी) तिलवाड़ा (की पत्नी रानी रूपा देवी ने भी एक संत के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की और लोगों को अध्यात्म का मार्ग दिखाया।

समान बाई की भक्ति पद्धति - : समान बाई राजस्थानी भक्ति साहित्य की महत्वपूर्ण कवयित्री मानी जाती हैं। उनके काव्य में कृष्ण के प्रति गहरी आस्था और आत्मीयता दिखाई देती है। उनकी रचनाएँ पद-परंपरा से जुड़ी हुई हैं और उनमें लोकभाषा का सहज प्रयोग मिलता है। समान बाई की प्रसिद्धि उनकी कृष्ण-भक्ति के कारण हुई। उनकी रचनाओं में भक्त और भगवान के संबंध को अत्यंत व्यक्तिगत और आत्मीय रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे कृष्ण को अपने जीवन का केंद्र मानती हैं। उनके लिए सांसारिक सुखों की अपेक्षा ईश्वर-सान्निध्य अधिक महत्वपूर्ण है। *मत्स्य की मीरा* के नाम से ख्याति प्राप्त *समान बाई* का नाम भी राजस्थान के संत भक्तों में बड़े सम्मान से लिया जाता है, भक्तिमति समान बाई राजस्थान की एक भक्त कवयित्री और संत थीं। समान बाई का जन्म अलवर - राजस्थान के सटावट या माहुन्द गांव में चारण जाति के एक परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम भक्त रामनाथ कविया था, जो स्वयं एक प्रसिद्ध कवि थे। इनका विवाह अलवर राज्यान्तरगत माहुंद गांव के ठाकुर रामदयाल जी के साथ हुआ था। विवाह के उपरांत ही आपने अपने पति से कह दिया था कि मैं अपने इस नश्वर जीवन को भगवद् उपासना में लगाना चाहती हूँ। आपके पति ने समान बाई की इच्छा स्वीकार करते हुए उपासना मार्ग में आने वाली प्रत्येक कठिनाई का निराकरण भी किया। आपने अपने पति की महानता का इस तरह वर्णन किया :

"शेष की सी रसना हो , बुद्धि हो गणेश की सी ।

पति को सराहों, युक्ति शारदा बतावै तो "।।

एकान्त समय में आप भगवंत भक्ति में भाव विभोर होकर भक्ति गीतो की रचना करती। आप के रचित सबैये व भक्ति गीत जो समान बाई के सोले कहलाते हैं ये विवाह शादी में गाये जाते हैं। बहुत ही सुन्दर व मन मोहक है। इनके द्वारा रचित सोलौ में दुल्ले राम को सम्बोधित करते हुए इन बना गीतो की रचना की हैं जो काव्यत्व तथा मधुर्य के कारण सुन्दर बन पड़े है। सांसारिक मोह-माया और ईश्वर के दर्शन में बाधा न आए, इसलिए उन्होंने आजीवन अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर रखी थी। वे केवल प्रभु की भक्ति में लीन रहना चाहती थीं। उन्होंने मुख्यतः राधा-कृष्ण की भक्ति में लीन होकर मुक्तक पदों की रचना की। उनकी भाषा में राजस्थानी, ब्रज और हिंदी का सुंदर मिश्रण मिलता है। समान बाई की भक्ति का मूल आधार **कृष्ण-प्रेम** है। कृष्ण उनके आराध्य हैं और उनके प्रति उनका संबंध केवल भक्त और भगवान का नहीं, बल्कि प्रिय और प्रियतम का भी है। इस कारण उनकी रचनाओं में भक्ति के साथ प्रेम की अनुभूति जुड़ जाती है। उनकी भक्ति में अनन्यता का भाव है। वे अपने आराध्य से किसी प्रकार का सांसारिक लाभ नहीं चाहतीं; उनका मूल उद्देश्य कृष्ण का सान्निध्य और दर्शन प्राप्त करना है। इस दृष्टि से उनकी भक्ति प्रेममय और आत्मसमर्पणपरक है। उनकी रचनाओं में कृष्ण के प्रति संबोधन अत्यंत आत्मीय है। भक्त और भगवान के बीच की दूरी कम होती हुई दिखाई देती है। यही आत्मीयता समान बाई की भक्ति को भावात्मक शक्ति प्रदान करती है।

समान बाई के काव्य में **विरह** भक्ति का अत्यंत महत्वपूर्ण आधार है। कृष्ण से वियोग उनके लिए केवल सांसारिक प्रेम-वियोग नहीं, बल्कि आध्यात्मिक पीड़ा का अनुभव है। प्रियतम के दर्शन न होने पर उनका मन व्याकुल हो उठता है। उनकी विरह-भावना में प्रतीक्षा, बेचैनी और मिलन की तीव्र आकांक्षा दिखाई देती है। प्रकृति के विभिन्न उपादान-बादल, वर्षा, बिजली, मोर और पपीहा आदि-उनके विरह को और अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। प्रकृति उनके अंतर्मन की स्थिति को प्रतिबिंबित करती हुई दिखाई देती है। इस प्रकार समान बाई के यहाँ विरह स्वयं में साधना का रूप धारण कर लेता है। कृष्ण से

दूरी जितनी बढ़ती है, उनके प्रति प्रेम और स्मरण उतना ही गहरा होता जाता है।

समान बाई की भक्ति में **माधुर्य भाव** विशेष रूप से उल्लेखनीय है। माधुर्य भाव में भक्त अपने आराध्य को प्रियतम के रूप में अनुभव करता है। समान बाई के काव्य में कृष्ण के प्रति इसी प्रकार की आत्मीयता दिखाई देती है। उनकी भक्ति में प्रेम की कोमलता और विरह की तीव्रता एक साथ दिखाई देती है। वे कृष्ण को अपने जीवन के परम प्रिय के रूप में अनुभव करती हैं। इस कारण उनके पदों में प्रेमिका के मन की प्रतीक्षा, आकांक्षा और मिलन की अभिलाषा सहज रूप में व्यक्त होती है। यह माधुर्य भाव उनकी भक्ति को भावुकता प्रदान करने के साथ-साथ उसे अत्यंत मानवीय भी बनाता है।

समान बाई की भक्ति में **दास्य-भाव** भी मिलता है। भक्त स्वयं को भगवान का सेवक या दास मानकर उनके चरणों में समर्पित करता है। समान बाई की रचनाओं में भी अपने आराध्य के प्रति विनम्रता और आत्मसमर्पण की भावना दिखाई देती है। यहाँ भक्त अपने अहंकार का त्याग करके ईश्वर की कृपा पर निर्भर हो जाता है। इस भाव में भगवान ही अंतिम आश्रय हैं और भक्त स्वयं को उनकी कृपा का पात्र मानता है। समान बाई के लिए भक्ति केवल भाव-विलास नहीं, बल्कि आत्मसमर्पण की प्रक्रिया है। उनके काव्य में यह भावना उनके आराध्य के प्रति पूर्ण विश्वास को व्यक्त करती है।

समान बाई की भक्ति में **शरणागति** का भाव भी प्रमुख है। संसार की अस्थिरता और मानवीय सीमाओं के बीच ईश्वर को अंतिम आश्रय मानना उनकी भक्ति-दृष्टि की विशेषता है। वे अपने आराध्य से कृपा की अपेक्षा करती हैं। भक्त की दृष्टि में भगवान सर्वशक्तिमान हैं और उनकी कृपा के बिना आध्यात्मिक संतोष संभव नहीं है। इसलिए समान बाई की भक्ति में विनय, प्रार्थना और आत्मसमर्पण के स्वर दिखाई देते हैं। शरणागति का यह भाव उनकी भक्ति को आध्यात्मिक गहराई प्रदान करता है।

समान बाई की रचनाओं की एक प्रमुख विशेषता उनकी **लोकभाषा और लोक-संवेदना** है। उन्होंने अपने भावों को कठिन शास्त्रीय भाषा में न कहकर जनसामान्य के निकट रहने वाली भाषा में व्यक्त किया। उनकी रचनाओं में लोकजीवन से जुड़े प्रतीक और बिंब दिखाई देते हैं। प्रकृति और दैनिक जीवन के प्रसंग उनके काव्य में सहजता से आते हैं। इससे उनकी कविता केवल व्यक्तिगत भक्ति की अभिव्यक्ति नहीं रहती, बल्कि लोक-संस्कृति का भी प्रतिनिधित्व करती है। लोकभाषा के कारण उनकी भक्ति आम जन के लिए अधिक ग्राह्य और आत्मीय बनती है। यही कारण है कि उनके पदों में शास्त्रीयता की अपेक्षा भावात्मक सहजता अधिक दिखाई देती है।

समान बाई की भक्ति-कविता का एक महत्वपूर्ण पक्ष **नारी-मन की अभिव्यक्ति** है। उनके काव्य में प्रतीक्षा, प्रेम, विरह, मिलन की आकांक्षा और समर्पण जैसे भाव स्त्री के निजी अनुभवों के माध्यम से व्यक्त होते हैं। यह अभिव्यक्ति केवल व्यक्तिगत प्रेम तक सीमित नहीं है। प्रियतम के रूप में कृष्ण के प्रति उनका प्रेम आध्यात्मिक प्रेम में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार सांसारिक प्रेम की अनुभूति ईश्वर-प्राप्ति की आकांक्षा का माध्यम बनती है। समान बाई की कविता में स्त्री अपने भावों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करती है। वह अपने आराध्य से संवाद करती है, शिकायत करती है, प्रतीक्षा करती है और अंततः स्वयं को उनके चरणों में समर्पित करती है।

सराजस्थानी भक्ति साहित्य में समान बाई का महत्व इस बात में है कि उन्होंने कृष्ण-भक्ति को लोकानुभूति और व्यक्तिगत संवेदना से जोड़ा। उनकी रचनाओं में भक्ति किसी दार्शनिक सिद्धांत के

रूप में नहीं, बल्कि हृदय की अनुभूति के रूप में सामने आती है। मीराबाई की तरह समान बाई के यहाँ भी कृष्ण के प्रति प्रेम और समर्पण की तीव्रता दिखाई देती है। फिर भी उनकी अभिव्यक्ति अपने लोक-सांस्कृतिक परिवेश और भाषा के कारण अपनी विशिष्ट पहचान बनाती है। इसलिए समान बाई को राजस्थानी महिला भक्ति-काव्य की परंपरा में स्वतंत्र रूप से देखा जाना आवश्यक है।

निष्कर्ष

समान बाई की रचनाओं में भक्ति जीवन की सबसे गहरी अनुभूति के रूप में व्यक्त हुई है। उनकी भक्ति का केंद्र कृष्ण हैं और उनके प्रति प्रेम, विरह, माधुर्य, दास्य तथा शरणागति इसके प्रमुख आयाम हैं। कृष्ण से वियोग उनके लिए पीड़ा अवश्य है, किंतु यही पीड़ा उनकी भक्ति को और अधिक गहन बनाती है। उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सहजता और आत्मीयता है। लोकभाषा, लोकजीवन, प्रकृति और नारी-मन की अनुभूतियों के माध्यम से उन्होंने भक्ति को सामान्य जन के निकट पहुँचाया। उनके काव्य में प्रेम और आध्यात्मिकता का ऐसा समन्वय दिखाई देता है जिसमें व्यक्तिगत भावनाएँ व्यापक भक्ति-अनुभूति का रूप ले लेती हैं। इन्होंने भक्ति को लोक जीवन से जोड़ा, राम और कृष्ण को लोक परंपराओं से जोड़कर अपने पदों में पिरोया। समाज में भक्ति से भरे राम एवं सीता विवाह के प्रसंगों की भावपूर्ण पदों में रचनाकर लोक रंगों की उजागर किया। जीवन सफलता में दृढ़ संकल्प के महत्व को मूर्त रूप देते हुए अपने आजीवन आँख पर पट्टी बांधे रखी। इन्होंने लिखा है कि जानकी नाथ सहाय करें उसको कौन बिगार करे नर तेरो यह सत्य है कि मानव रचना में परमात्मा की परम सत्ता के प्रति श्रद्धा विश्वास के भाव जन्मजात बीज रूप में है अतः मानव मन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाली भक्ति धारा ही है जिसके माध्यम से मनुष्य में मानवीय गुणों का विकास किया जा सकता है। इन संतों ने राजसी वैभव और सामाजिक वर्जनाओं को ठुकरा कर एक स्वतंत्र आध्यात्मिक जीवन जिया। संस्कृत के बजाय आम बोलचाल की स्थानीय राजस्थानी, ब्रज और हिंदी भाषा में पदों की रचना करके भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया। आज भी राजस्थान के गाँव-गाँव में इन संतों द्वारा रचित भजन और साखियाँ गाए जाते हैं, जो यहाँ की सांस्कृतिक और नैतिक नींव को मजबूत करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि समान बाई की रचनाएँ राजस्थानी कृष्ण-भक्ति साहित्य की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। उनकी भक्ति में प्रेम साधना है, विरह साधना का माध्यम है और शरणागति उसका चरम रूप है। उनकी काव्य-संवेदना राजस्थानी लोकसंस्कृति तथा महिला भक्ति-काव्य, दोनों के अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

1. मत्स्य की मीरा भक्तिमती समान बाई और उनका काव्य - उदय सिंह पालावत
2. भक्तिमती समान बाई जीवन और काव्यमंजुला .डॉ - बारहठ
3. समान बाई - धनंजया अमरावत
4. चारण सहित्य का इतिहास मोहन लाल जिज्ञासु .डॉ -
5. राजस्थानी साहित्य का इतिहास - मोतीलाल मेनरिया